विदर्भ स्वाभिमान

RNI NO. MAHHIN / 2010 /43881

संपादक : सुभाषचंद्र दुबे

प्रबंधक : सौ. विणा एस. दुबे

अमरावती । गुरुवार दि.१ से ७ अगस्त २०२४ | गुरुपुजन तु वर्धापन दिन विशेषकांक | वर्ष १५ । अंक ६ । पृष्ठ ८ । मूल्य २०रु. | पोस्टल रजि.नं. ATI/RNP/268/2021-2024

बाबूजी के आदर्श विचार

साथ देकर भी पुण्य कमा सकते हैं

जीवन में अगर हम कुछ बहुत अच्छा नहीं पाते हैं तो कोई अच्छा करता है तो उसका सहयोग और प्रोत्साहन देकर हम पुण्य के भागीदार हो सकते हैं. बुरे को बुरे कहने वाले लाखों मिल जाते हैं लेकिन अच्छे का साथ देने वालों की संख्या उंगलियों पर गिनने वाली होती है. जबकि जब अच्छाई वाले लोग मिलते हैं तो मदद से कन्नी काटते हैं.अच्छे को साथ देने का प्रयास करना चाहिए. आपका दिन मंगलमय हो, हम यही कामना करते हैं.

वात्सल्यमूर्ति,अष्टपैलू मां कनकेश्वरीदेवी

मां का जीवन एक सामाजिक प्रयोगशाला है. वे आचरण का विद्यापीठ हैं, समतामूर्ति कोकिला, मानव कल्याण की हिमायती,प्रवचन भारती, व्याख्यान वाचस्पति, विश्व प्रेम प्रचारिका, मैत्री भावना की प्रचारिका, सहज, सरल सेवा वात्सल्य की मूर्ति हैं. धार्मिक संत, शिक्षाविद, वेद विद्या की प्रचारक,पर्यावरण विद, हर प्रमुख प्रसंगों पर पौधारोपण,संवर्धन और पौधे बांटती हैं. संगीत विशेषज्ञ, सामाजिक नेतृत्वगुण में बेटियों का सामुहिक विवाह तथा हरसंभव सहयोग, कुशल प्रशासक के साथ प्रबंधन सद्गुरू. सांस्कृतिक मूल्यों जतन और मूल्यवर्धन पर विशेष जोर, अन्नपूर्णा हैं, सभी आश्रमों में भोजन की व्यवस्था.भारतीय संस्कृत की प्रतिनिधि हैं. गुरूनिष्ठा, गुरूभक्ति की उदाहरण. हर शिष्य को संभालने वाली मातृत्व शक्ति.कठोर परिश्रम व व्यापक यात्रा, नृत्य,संगीत और गरबा को सदैव प्रोत्साहन देती हैं. मां अग्नी अखाडे की महामंडलेश्वर बनने वाली प्रथम महिला हैं. वे मानस मर्मज्ञ तथा मानस मार्तंड है.

शेष पेज ३-४ पर भी देखें.

सर्वाधिक लोकप्रिय हिन्दी अखबार विदर्भ स्वाभिमान का सदस्य बनने तथा विशेषांक के लिए संपर्क करें

– सम्पर्क –

9423426199, 8855019189

9420406706

विशेष सहयोग एवं साज सज्जा

सुदर्शन गांग, डॉ. अजय बोंडे

पंकज धुंडियाल, नानकराम नेभनानी

ज्ञानेश्वर धाने पाटील

संजय भोपाळे, 8806058697

पाठकों के प्यार,विज्ञापनदाताओं के सहयोग के आभारी

अच्छे का साथ देने वालों की अमरावती में नहीं है कमी

कहते हैं दुनिया बहुत बुरी है, यहां सच्चाई को परेशान होना पड़ता है. लेकिन चौदह साल से शुरु संस्कार, मानवता, परिवार की एकता को बढ़ावा देने के साथ ही सदैव सकारात्मकता को साथ देने वाले विदर्भ स्वाभिमान को अमरावती की महानता का अनुभव हुआ. सकारात्मक पत्रकारिता के लिए प्रयास करने वाले अखबार नहीं निकाल सकते हैं, यह मिथक इस अखबार ने गलत साबित किया. दुनिया का अच्छा रूप दिखाने का जहां प्रयास किया, वहीं दूसरी ओर ऐसा करते समय संभवतः यह देश का पहला ऐसा समाचार पत्र होगा, जिसने शुरूवात से लेकर चौदह साल में कभी भी ऐसी खबरें नहीं छापी, जिससे समाज की शांति भंग हो, सामाजिक विद्वेष फैले, हत्या, हत्या के प्रयास, बलात्कार सहित इस तरह की कोई खबर कभी छापी ही नहीं. इसके पीछे सोच केवल इतनी सी कि दुनिया का अपराधी रूप दिखाने की बजाय आज भी कई महिलाएं ऐसी हैं, जिन्होंने अपनी मेहनत से स्थितियां बदली हैं, ऐसे भी शांतिबाई कोठारी जैसी आदर्श मां हैं, जिनकी प्रेरणा से बेटे प्रा. कोठारी ने ऐसे माता-पिता के लिए मुंबई-दिल्ली को भी झुकाने वाले ज्ञान शांति उपवन तैयार किया, चंद्रकुमार जाजोदिया ने १०१ भागवत कथाओं के माध्यम से शहर ही नहीं तो राज्यभर में युवाओं को व्यसन मुक्ति का प्रयास किया, भारतीय जैन संगठन के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष सुदर्शन गांग ने मानवता के साथ ही गौमाता की सेवा, गरीब छात्रों का अभिनंदन बैंक के माध्यम से समारोह लेकर सत्कार किया और उन्हें सदैव आगे बढ़ने की प्रेरणा दी. सिंधी समाज के नानकराम नेभनानी शहर में सर्वधर्म समभाव को बढ़ावा देने वाले और हर समाज को मदद करने वाले नेता हैं, लेडी गवर्नर डॉ.कमलताई गवई शान हैं,

सुभाष दुबे

9423426199

पूर्व सांसद नवनीत राणा, महिलाओं और बच्चों के लिए मंत्री रहते समय कल्याणकारी योजनाओं को शु डिग्री करने वाली पूर्व मंत्री विधायक एड. यशोमति ठाकुर, विधायक सुलभाताई खोड़के,पूर्व विधायक व पालकमंत्री डॉ. सुनील देशमुख, प्रवीण पोटे पाटील के साथ पेज १ से जारी – ही हजारों ऐसे लोग हैं, जिनका १४ साल में जबर्दस्त साथ, सहयोग मिला. यही कारण है जिले की शान समझी जाने वाली लेडी गवर्नर पूर्व प्राचार्य डॉ. कमलताई गवई के नागरी सत्कार के दौरान विदर्भ स्वाभिमान जैसे छोटे से किये गए प्रयास को सभी ने सराहा.

अच्छाई के लिए सलाम

आजकल जिस तरह हर क्षेत्र में सेटिंग, बैठक का जमाना चल रहा है और प्रगति हो रही है, उससे विदर्भ स्वाभिमान ने सदैव अपने आप को दूर रखा. पत्रकारिता के आदर्श मूल्यों को सदैव बरकरार रखा और जब तक यह समाचार पत्र चलेगा, तब तक उन मूल्यों के लिए ही पूरी तरह से समर्पित रहेगा. इसका विश्वास मैं अपने ऐसे अनमोल हीरों के कारण दिलाना चाहता हूं, जिनका मेरी नेक और सच्ची पत्रकारिता में सिंह के जैसे योगदान रहा है. आरंभिक संघर्ष के दौर में चाहे विदर्भ स्वाभिमान को संभालने के लिए राष्ट्रीय स्तर के समाजसेवी, १०१ भागवत कथाओं के माध्यम से पूरे राज्य में युवाओं को निर्व्यसनी बनाने वाले चंद्रकुमार जाजोदिया हों, भारतीय जैन संगठन के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष सुदर्शन गांग, आराधना के पूरणसेठ हबलानी, समाजसेवी नानकराम नेभनानी, डॉ.पंकज धुंडियाल, रघुवीर के प्रमुख दिलीपभैया पोपट, पूर्व लोकप्रिय पालकमंत्री जगदीश गुप्ता, राष्ट्रीय स्तर के नेत्र शल्य चिकित्सक डॉ. राजेश जवादे,श्रद्धा के पूरण लाला, डॉ.पंकज धुंडियाल, अभिषेक पंजापी, प्राचार्य डॉ.सुभाष गवई, प्राचार्य सुधीर महाजन, पूर्व प्राचार्य गौरी अय्यर तथा गणेश अय्यर के साथ ही ऐसे सैकड़ों नाम हैं, जिनका सहयोग ही मेरी नेक पत्रकारिता में सदैव मील का पत्थर साबित हुआ है. आज यह कहते हुए मुझे गर्व हो रहा है कि आज सैकड़ों लोगों के साथ के कारण ही विदर्भ स्वाभिमान सदैव नित-नए प्रयोग करता रहा है. इससे अच्छाई पर मेरा विश्वास सदैव बढ़ता रहा है और इसी के भरोसे यह प्रयास आजीवन उसी ईमानदारी, पवित्रता के साथ सदैव करने का संकल्प लेते हैं. मेरे जीवन में सदैव मैने श्रद्धा और विश्वास पर विश्वास किया. धर्म को मानने वाला और उसके मुताबिक आचरण करने वाला जीवन में कभी गलत काम नहीं कर सकता है, इसका मुझे विश्वास रहा है. मेरे जीवन में माता-पिता की सेवा का चमत्कार मैंने हर पल अनुभव किया है. मेरा खुद के अनुभव से दावा है कि जीवन में आदर्श संस्कारित माता-पिता, आज्ञाकारी पत्नी और पुत्र-पुत्री मिलने के बाद जीते जी ही स्वर्ग की अनुभूति की जा सकती है. माता-पिता की सेवा करने वाले पुत्र को तकलीफ हो सकती है लेकिन वह कभी हार नहीं सकता है. विदर्भ स्वाभिमान ने सदैव संस्कार, आदर्श आचार-विचार, सर्वधर्म समभाव के साथ ही समाज में जो कुछ भी अच्छा हो रहा है, उसे ही लोगों के सामने लाने का प्रयास किया है. इसका अमरावती ही नहीं तो देशभर से व्यापक साथ मिलने के कारण ही अच्छाई में मेरा भरोसा बढ़ा है. यही कारण है कि जब भी मन में कुछ गलत विचार आते हैं, मेरा ही मन मुझे रोक देता है. संस्कार का जतन जहां होता है, वहां बुराईयां नहीं आ सकती हैं. जिन घरों में महिलाएं रामायण, श्रीमद् भागवत गीता पढ़ती हैं, उन घरों के बच्चे न किसी के साथ भागते हैं और न ही कोई गलत काम करते हैं.

सकारात्मक पत्रकारिता को पूरी तरह से समर्पित

विदर्भ स्वाभिमान

15

वे वर्ष में प्रवेश पर हमारी

हार्दिक शुभकामनाएं.

चंद्रकुमार उर्फ लप्पी भैय्या जाजोदिया

चेयरमैन मधुसूदन ग्रूप अमरावती, मुंबई.

राष्ट्रीय स्तर के समाजसेवी.

विशेष संपादकिय

आप सभी का साथ, सदैव जीवन में रखूंगा याद

धर्म,संस्कार, आदर्श आचार–विचार को प्रोत्साहन देने के साथ ही परिवार की एकता, माता–पिता की सेवा और स्वार्थ से रहित रिश्तों की मजबूती को सदैव महत्व देने वाले राष्ट्रीय हिंदी साप्ताहिक विदर्भ स्वाभिमान ने १४ साल का सफर पूरा कर २९ जुलाई २०२४ को १५वें वर्ष में पदार्पण किया है. इसकी खुशी के साथ ही इस नैतिकता के साथ किए गए सफर में हमारे वह अनमोल लोग भी उतने ही महत्वपूर्ण हैं, जिनके सहयोग के बगैर इतनी बड़ी जिम्मेदारी मैं शायद निभा पाता. आज क्षेत्र की तरह ही पत्रकारिता क्षेत्र को भी बुराईयों ने दीमक के रूप में घेरा है, सच्चाई, नैतिकता इसमें भी कम हुई है लेकिन जैसा कहते हैं कि अंधेरे को नष्ट करने के लिए एक दीपक ही काफी है. उसी तर्ज पर हमने ३५ साल से पत्रकारिता की है और भविष्य में भी यही नैतिकता कायम रखने का विश्वास दिलाते हैं.बुराई कितनी भी ताकतवर हो जाए, वह अच्छाई पर हावी नहीं हो सकती है. उसी तरह बेईमानी, मक्कारी से धन कमाया जा सकता है लेकिन आत्मीक सुकून और खुशी किसी भी कीमत पर नहीं कमाई जा सकता है.

मेरे जीवन में आए बेहतरीन लोगों के कारण निश्चित ही ऐसे भाग्यशालियों में मैं खुद को मानता हूं. वर्ष २०१० में जब विदर्भ स्वाभिमान की नींव डाली थी तो स्वयं निजी नौकरी करते हुए यह अखबार कैसे निकलेगा, इसकी चिंता थी. लेकिन सच्चाई और अच्छाई का मार्ग चुनने के बाद अमरावतीवासियों ने जिस तरह का प्रेम दिया, उससे पत्रकारिता के आदर्शों को कायम रखते हुए काम करने की प्रेरणा मिली. ऐसे हजारों नाम हैं, जिन्होंने साथ दिया और आज भी दे रहे हैं. १५ वें वर्ष के पदार्पण में यह सीना तानकर कह सकता हूं कि मेरे पूज्य पिताजी पं. जमुनाप्रसाद पारसनाथ दुबे के आदर्श विचारों पर चलते हुए यह सफर तय किया है. पत्रकारिता के उच्च मापदंडों को बरकरार रखते हुए इस पर ही चला हूं और आगे भी चलता रहूंगा. यह भारत का पहला ऐसा अखबार बना, जिसने कभी नकारात्मकता को फटकने नहीं दिया. सामाजिक, मानवता वाली, राष्ट्रीयता की सोच को जहां हमने बढ़ावा दिया, वहीं माता–पिता की सेवा के महत्व, परिवार में एकता की ताकत, सुमति से ही आर्थिक विकास, प्रेम बढ़ाने और नफरत को कम करने, बच्चों को संस्कारित करने पर ही सदैव जोर दिया.भाईयों का प्रेम बढ़ाने, जल के महत्व, पर्यावरण संतुलन के साथ ही भक्तीधाम जैसे अच्छे मंदिरों के साथ ही हर अच्छे काम को कवरेज के माध्यम से प्रोत्साहित करने का प्रयास किया. बढ़ाने के साथ ही विदर्भ स्वाभिमान ने सदैव अहिंसा परमोधर्म को अपना मूलमंत्र मानते हुए पत्रकारिता की है. इस दौरान वैसे तो सदैव अनगिनत लोगों का साथ मिला, लेकिन अमरावती शहर के डाक्टरों का विदर्भ स्वाभिमान को सदैव आशिर्वाद और साथ मिला. इसमें डॉ. राजेश शर्मा, मेरी मुंहबोली बहन डॉ. प्रांजल शर्मा, डॉ. पंकज घुंडियाल, डॉ. अजय डफळे, बड़े भाई के रूप में राष्ट्रीय नेत्र शल्य चिकित्सक डॉ. राजेश जवादे, डॉ. तृप्ती जवादे, राजेन्द्र नवाथे,अजय डफळे, मेरे मित्र प्रा.डॉ. अजय बोंडे के साथ ही सैकड़ों डाक्टरों ने आजीवन सदस्यता ग्रहण करते हुए सदैव नेक पत्रकारिता में हाथ बंटाने का काम किया. अगर आज पत्रकारिता के उच्च मापदंडों को बरकरार रखते हुए विदर्भ स्वाभिमान ने यह सफलता हासिल की है तो इसका पूरा श्रेय मेरे अनमोल रत्न आजीवन सदस्यों को ही जाता है. व्यवसायियों में आराधना के प्रमुख पूरणभैया हबलानी का सदैव छोटे भाई जैसा साथ, श्रद्धा साड़ीज के पूरण लाला,चंद्रकुमार जाजोदिया, राणा दम्पति का विश्वास निश्चित ही मेरी पत्रकारिता को पवित्रता के साथ बढ़ाने में महत्तम योगदान दिया.रघुवीर के दिलीपभाई पोपट, मंगलम के संचालक प्रशांत मुंधड़ा, पूर्व पालकमंत्री जगदीश गुप्ता, पूर्व विधायक ज्ञानेश्वर धाने पाटिल, पूर्व पालकमंत्री डॉ. सुनील देशमुख, उपाध्याय ड्रायफ्रूट के मेरे मुंहबोले चाचा रामेश्वर उपाध्याय, दुग्धपूर्णा के संचालक बालकिसन पांडेय, मेरे बड़े भ्राता हेमंत कुमार पटेरिया, डी.के. सिंह, डॉ. सुभाष रत्नपारखी के साथ ही हजारों ऐसे मित्र मिले, जिन्होंने सदैव मदद का हाथ दिया. मनोज डफळे और राजेन्द्र नवाथे जीवन में ऐसे अनमोल मित्र हैं, जिनका साथ कभी मैं भूल ही नहीं सकता है.सबसे बड़ी बात यह रही है कि मुझे हर क्षेत्र के लोगों का प्यार मिला. पत्रकारिता में आमतौर पर यह दुर्लभ होता है. पोदार इंटरनेशनल के प्राचार्य सुधीर महाजन के नेक कामों में सहयोग के साथ ही स्वयं की कल्पनाएं सदैव महत्वपूर्ण रहीं. विदर्भ स्वाभिमान को अमरावतीवासियों ने अपार प्रेम दिया, मेरी पत्नी वीणा, बड़ी बेटी, श्वेता, वंशिका, मेरे भाईयों,भतीजों, भांजे तथा दुबे–त्रिपाठी परिवार का साथ सदैव मिला है. आप सभी के प्रति दिल की गहराईयों से हार्दिक धन्यवाद. सभी का प्रेम इसी तरह सदैव मिले, इसी कामना के साथ १५वीं वर्षगांठ पर सभी को हार्दिक शुभकामनाएँ.

यह समाचार पत्र मालिक, प्रकाशक,संपादक सुभाषचंद्र जमुनाप्रसाद दुबे द्वारा एस.बी.प्रिंटर्स द्वारा दत्त पैलेस गांधी चौक अमरावती में मुद्रित कर विदर्भ स्वाभिमान कार्यालय,छाया कॉलोनी,अकोली रोड,अमरावती में प्रकाशित किया गया है. मोबाइल नंबर ९४२३४२६१९९/८८५५०१९१८९.अखबार में प्रकाशित होने वाले विभिन्न पत्र,साहित्य,लेखकों, कवियों के विचारों व तथ्यों पर आधारित होते हैं. इनसे संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं है.
संपादक सुभाषचंद्र जमुनाप्रसाद दुबे (संपादकीय दायित्व हेतु जिम्मेदार), मुख्य प्रबंधक– सौ.वीणा सुभाषचंद्र दुबे.
Email-vidarbh.swabhiman@gmail.com,www.vidarbhswabhiman.com

नैतिकता का पतन विनाश का कारण

कहते हैं कि जीवन में सब कुछ चला जाए चलेगा लेकिन नैतिकता का पालन सदैव करना चाहिए. नैतिकता का संबंध हमारे बचपन से मिले संस्कारों से रहता है. बचपन में अच्छी परवरिश , अच्छी सोच, अच्छे लोगों की संगत के साथ ही माता–पिता के आदर्श विचारों का बच्चों पर असर पड़ता है. माता–पिता के आदर्श संस्कार ही हैं, जो जीवन में सदैव साथ रहते हैं. लेकिन आज दुनिया तो हमारी मुट्ठी में आ गई है लेकिन इसी दुनिया में स्वयं को झोंकने के कारण हम सारे नाते–रिश्तों के साथ ही अन्य बातों में भी पिछड़ते जा रहे हैं. नैतिकता का पतन किसी एक क्षेत्र में नहीं है. नैतिकता के पतन से आज बेटा ही माता–पिता को वृद्धाश्रम तक छोड़ने जा रहा है, आज पति–पत्नी के संबंधों में अहंकार इतना है कि पत्नी की कोई बात पति को और पति का अहंकार पत्नी को हर्ट कर रहा है. परिवार में जब यह स्थिति बनती है तो निश्चित तौर पर परिवार की खुशियां छिन जाती हैं. विदर्भ स्वाभिमान का स्पष्ट मत है कि अगर बिगड़ी हुई व्यवस्था सुधारनी है और आदर्श समाज का निर्माण करना है तो सरकार को बच्चों की शिक्षा के साथ ही बचपन से ही उन्हें आदर्श संस्कार देने के लिए भी कक्षाएं लेनी चाहिए. भारतीय जैन संगठन द्वारा इस बारे में किया गया प्रयास निश्चित ही सराहनीय है. आज बदली समाज व्यवस्था में सब कुछ रहने के बाद भी घर में सुख नहीं है. समर्पण नहीं है. परिवार में पति तथा पिता जी–जान से मेहनत कर परिवार को चलाता है लेकिन बाहर से थका–हारा आने के बाद अगर उसके घर

खरी-खरी

के सभी सदस्य मोबाइल और वाटसअैप पर लगे रहते हैं और पानी भी नहीं पूछते हैं तो इसका कितना दर्द उस पिता को होता है, इसका अंदाजा केवल वही लगा सकता है. आजकल दलीलें देने की प्रवृत्ति हर परिवार में बढ़ी है. विदर्भ स्वाभिमान द्वारा कुछ महीने पहले किए गए सर्वेक्षण में यह बात सामने आयी थी कि बीमारियों का सबसे बड़ा कारण बढ़ता हुआ तनाव है. इसके कारण आज हर परिवार से खुशियां गायब हो रही हैं. इसका कारण भी नैतिकता का पतन है. आज से कई दशक पहले मां बच्चों को संस्कार देकर आदर्श नागरिक बनाने और पिता उनके जीवन तथा भविष्य को संवारने का काम करता था. बच्चों में आज्ञाकारी प्रवृत्ति बचपन से रहती थी. लेकिन जब से मोबाइल आया और पति अपने वाटसअैप तथा पिता अलग मोबाइल, बच्चे बचपन से ही वह सब कुछ सीखने तत्पर हैं, जिसे सीखने के लिए पहले २० साल तक इंतजार करना पड़ता था. बढ़ते अपराध, नाबालिगों की सहभागिता, लोगों में घटता संयम, बढ़ता अहंकार ही हमारे दुश्मन होते जा रहे हैं. आज ही नहीं तो गरीबी, संघर्ष पहले भी थे, आज तो सुविधाएं इतनी बढ़ी हैं कि हर मामले में हम आगे हैं. इसका सदुपयोग करने की बजाय होता दुरूपयोग ही परिवार के साथ ही शांति को भंग कर रहा है. आज कमाई बढ़ने के बाद भी हर इंसान परेशान है. इसका क्या कारण है. हमें यह नहीं सूझ रहा है कि क्या करें. कहते हैं कि परिवार की एकजुटता ही जीवन को संवारने का सबसे बड़ा माध्यम है लेकिन संस्कार और नैतिकता के अभाव में वह गायब होती जा रही.नैतिकता की शिक्षा बचपन से देने के बाद देश की कई समस्याओं का वैसे ही समापन होकर सही मायने में रिश्ते मजबूत होंगे और सर्वत्र खुशहाली वाली स्थिति रहेगी.

जागृत मंदिर है खल्लार का बालाजी मंदिर

अमरावती से कुछ किलोमीटर की दूरी पर स्थित खल्लार गांव में बालाजी का मंदिर जागृत मंदिर के रूप में सुख्यात है. इस मंदिरि में अपार श्रद्धा के साथ ही भक्तिभाव वाला नजारा रहता है. इस मंदिर में वर्षों से जुड़े भक्त कहते हैं कि सच्चे दिल से इस मंदिर में की गई मन्नता पूरी होती है. कहते हैं कि भक्ति की शक्ति अपार होती है. अगर हमारा भाव शुद्ध है तो ही इसका अनुभव लिया जा सकता है. श्रद्धा से विश्वास और विश्वास से असंभव भी हो सकता है. ऐसे में यह मंदिर पौराणिक महत्व रखता है. दत्त जयंती पर यहां से बालाजी की मूर्ति गणोजा देवी ले जाई जाती है.

असंभव भी संभव हो जाता है. इसका अनुभव अमरावती शहर के साथ ही विदर्भ के सैकड़ों भक्तों को बडनेरा से कुछ किलोमीटर की दूरी पर खल्लार स्थित प्राचीन और पौराणिक बालाजी मंदिर से आता है. मंदिर में स्थापित भगवान बालाजी स्वयंभू हैं. बताते हैं कि कुएं में मिली इस मूर्ति का दर्शन कर भक्त जहां तृप्त होते हैं, वहीं अमरावती के भक्तों द्वारा हर शुक्रवार को यहां पर अभिषेक सुबह ७ से १० बजे तक किया जाता है. इस धार्मिक अनुष्ठान में अमरावती के बड़ी संख्या में भक्त शामिल होते हैं.खल्लार बालाजी मंदिर की भगवान बालाजी की मूर्ति को जागृत मूर्ति के रूप में माना जाता है. मंदिर से जुड़े महेश डोबा और कई साल से हर शुक्रवार को यहां आने वाले और भगवान बालाजी का अभिषेक करते हुए आत्मिक आनंद की अनुभूति करने वाले रामार्पण परिवार के अतुल महाराज बताते हैं कि मंदिर में कुछ पल बैठने पर ही अपार सुकून की अनुभूति होती है. यही कारण है कि पिछले कई साल से वे तथा भक्त परिवार मंदिर से जुड़ा है. मंदिर की मूर्ति का दर्शन करने के लिए दूर–दूर से लोग आते हैं.

राजेश बनारसे
8806151486

ऐसे भी सैकड़ों भक्त हैं, जिनके भाव का साक्षात्कार यहां हुआ है. इस मंदिर में न केवल अमरावती, बल्कि देशभर से गोविंदा के भक्त आते हैं. बड़ी संख्या में भक्त तिरूपति में जाकर दर्शन करने के बाद मावंद इस मंदिर में करते हैं. भक्त अतुल महाराज के मुताबिक एक बार दर्शन के लिए जो यहां आता है, वह बार–बार यहां आता है. भक्त महेश डोबा बताते हैं कि यहां आने वाले भक्तों की सभी चाहतें पूरी होने के बाद वे जिंदगी भर के लिए यहां से जुड़ जाता है. सभी के जीवन में खुशियां आती हैं. ऐसे में उस भक्त का विश्वास बढ़ता जाता है. बताते हैं कि इस मंदिर में स्वयं बालाजी कुछ दिनों तक ठहरने के कारण यह मंदिर क्षेत्र पुनीत हो गया है. मंदिर की खूबी यह है कि सूर्य की पहली किरण चरणों पर पड़ती है. इसका अनुभव गांव ही नहीं बल्कि यहां धर्म कार्य करने के लिए आने वाले हजारों भक्तों द्वारा लिया जाता है. भगवान वेंकटेश्वर बालाजी के चरणों में सदैव सेवारत रहने वाले भक्त महेश डोबा बताते हैं कि भगवान बालाजी की मूर्ति की महत्ता का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि खल्लार में स्थित बालाजी की मूर्ति के चरणों पर सूर्य की पहली किरण गिरती है. अमरावती से हर शुक्रवार को यहां भक्तों की टीम जाती है और शुक्रवार को भगवान बालाजी का अभिषेक करती है. सुबह ७ से १० बजे का यह नजारा विलक्षण रहता है.एक बार यहां अवश्य दर्शन करते हुए जीवन को धन्य करना चाहिए

आदर्श युवा होते हैं देश की सबसे बड़ी ताकत

राज्य भर में १०१ कथाएं करवाने वाले समाजसेवी चंद्रकुमार जाजोदिया का प्रतिपादन

अमरावती–किसी भी देश की असली ताकत उसके युवक होते हैं. यह संस्कृत और निर्वाषिनी रहने पर देश की प्रगति होती है. उस देश को दुनिया की कोई ताकत हरा नहीं सकती है. लेकिन आज गलत संगत और अन्य कर्मियों के चलते युवा पीढ़ी विभिन्न व्यसनों के अधीन हो गई है. इससे यह जहां शारीरिक रूप से कमजोर हो रही है वहीं दूसरी ओर युवा पीढ़ी मानसिक रूप से भी परेशान है. इसी को ध्यान में रखते हुए समाजसेवी और दानशूर चंद्र कुमार उर्फ लप्पी भैया जाजोदिया द्वारा पूरे महाराष्ट्र के विभिन्न शहरों में श्रीमद् भागवत कथा के माध्यम से युवाओं को संस्कृत करने का बीड़ा उठाया गया है.अभी तक राज्य के विभिन्न हिस्सों में उन्होंने ५५ से अधिक श्रीमद् भागवत कथाएं ली हैं कथा प्रवक्ता आत्मतदास महाराज ने कथा के दौराने युवाओं में बढ़ते व्यसन को लेकर चिंता जताने के साथ व्यसनाधीन परिवार की किस तरह दुर्गति होती है और जीवन बर्बाद हो जाता है इस पर मार्गदर्शन किया.

कथा के दौरान महाराज श्री द्वारा किए गए मार्गदर्शन से प्रभावित होकर कई ऐसे गांव के युवकों ने जीवन भर व्यसन से तौबा करने का संकल्प लिया, जिन गांवों में यह कथा हुई वहां के लोगों ने दिल से समाजसेवी लप्पी भैया जाजोदिया को धन्यवाद देने के साथ ही राष्ट्रीय स्तर पर युवाओं को आदर्श संस्कार प्रदान करने की प्रयास की जी भरकर सराहना की. सुनने के लिए हर गांव में हजारों की संख्या में भक्तों का वर्णन

इस बात का प्रमाण है कि लोगों ने लप्पी भैया जाजोदिया के प्रयास को सर आंखों पर बिठाया. वे केवल धार्मिक ही नहीं बल्कि गरीब, आदिवासियों की मदद के साथी सैकड़ो ऐसी संस्थाओं को भी सदैव आर्थिक मदद करते हैं जो संस्थाएं समाज के कल्याण के लिए अथवा मानव कल्याण के लिए कार्य कर रही है.

मानवता की सेवा है धर्म

इस बारे में चंद्र कुमार जाजोदिया ने बातचीत करते हुए कहा कि माता–पिता के आशीर्वाद और प्रभु की कृपा से उन्हें जो संपन्नता मिली है, उसका कुछ हिस्सा सामाजिक, धार्मिक तथा गरीबों एवं किसानों की मदद के लिए खर्च करने का वह प्रयास करते हैं. अमरावती शहर ने उन्हें अपार प्रेम दिया है इस माध्यम से वे उसे प्रेम की प्रतिपूर्ति करने की चाहत रखते हैं. विदर्भ स्वाभिमान को धर्म, मानवता तथा सकारात्मक को समर्पित पेपर बताते हुए १५ में वर्ष में पदार्पण पर आशीर्वाद देने के साथ इसी तरह पत्रकारिता को समाज सेवा का माध्यम मानते हुए गौरवान्वित करने की बात कही.

महामंडलेश्वर कनकेश्वरी देवी

साध्वी कनकेश्वरी देवी जी अग्नि अखाड़े की पहली महामंडलेश्वर हैं. उनका बचपन से ही भक्ति में रुझान था और भगवान शिव उनके आराध्य थे. नौ साल की उम्र में ही भगवान शिव के दर्शन के लिए उन्होंने साधना शुरू कर दी थी. इस दौरान मोरबी में अग्नि अखाड़े के श्री महंत स्वामी केशवानंद बापू से उनकी मुलाकात हुई. कनकेश्वरी देवी कहती हैं कि उनसे मिलकर उन्हें लगा कि जिस भगवान के दर्शन की आस थी, वो पूरी हो गई है. गुरु के त्याग और वैराग्य के दर्शन से उनकी चेतना जागी और उनका जीवन वैराग्य की ओर चल पड़ा. उन्होंने रामायण और भागवत का अध्ययन किया और १६ साल की उम्र में पहली कथा की.

उज्जैन में सिंहस्थ में अग्नि अखाड़े की साध्वी कनकेश्वरी देवी को बड़े-बड़े संतों की मौजूदगी में हुए भव्य पट्टाभिषेक समारोह में महामंडलेश्वर की पदवी प्रदान की गई। अपनी सौम्यता से एक अलग पहचान बनाने वाली कनकेश्वरी देवी ने सिर्फ नौ साल की उम्र में ही सांसारिक जीवन छोडकर दीक्षा ले ली थी। वे अग्नि अखाड़े की पहली महिला महामंडलेश्वर हैं.

भगवान शिव के दर्शन के लिए बनीं थीं साध्वी...

कनकेश्वरी देवी का जन्म गुजरात के मोरबी का है। वो बचपन से ही विशेष प्रतिभा संपन्न रही हैं. एकबार पढ़ने या सुनने के बाद कोई भी श्लोक, मंत्र या कहानी वैसे के वैसे दोहरा देतीं थीं. बचपन से उनका रुझान भक्ति की तरफ था. भगवान शिव उनके आराध्य हैं. शिव के दर्शन के लिए नौ साल की उम्र में साधना शुरू कर दी थी.

इसी दौरान मोरबी में अग्नि अखाड़े के श्री महंत स्वामी केशवानंद बापू से उनकी मुलाकात हुई. कनकेश्वरी देवी कहती हैं उनसे मिलकर मुझे ऐसा लगा कि मुझे जिस भगवान के दर्शन की आस थी वो पूरी हो गई है. गुरु में मुझे शिव सा सौम्य रूप दिखा। उनका त्याग, वैराग्य के दर्शन से चेतना जागी और मेरा जीवन वैराग्य की ओर चल पड़ा. रामायण व भागवत का अध्ययन किया. १६ साल की उम्र में पहली श्रीराम कथा की.

गुरु का प्रसाद है महामंडलेश्वर का पद

कनकेश्वरी देवी ने कहा कि महामंडलेश्वर का पद मेरी योग्यता का नहीं बल्कि गुरु की कृपा का प्रसाद है. गुरु स्वामी केशवानंद बापू के साथ शुरू से रही हूं. उनकी कृपा और आशीर्वाद से अखाड़ों के पंचों ने महामंडलेश्वर के लिए चुना है. उन्होंने कहा महामंडलेश्वर बनने के बाद नाम जरूर बदल जाएगा लेकिन और कुछ नहीं बदलेगा. बचपन से वैरागी जीवन बिता रही हूं. साधना के अलावा शास्त्रों के मुताबिक अनुशासित जीवन बाल ब्रह्मचारी के रुप में जी रही हूं.

सभी के चहेते दीपक आगरकर

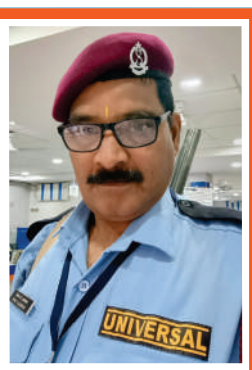

कहते हैं कि ड्यूटी करना एक विषय होता है लेकिन लोगों की मदद करते हुए लोगों के दिलों में सम्मान पाना दूसरा विषय होता है. बैंक ऑफ इंडिया के सुरक्षा रक्षक दीपक आगरकर फौज में देश की सेवा करने के बाद यहां भी सेवा के उन्हीं उच्च मापदंडों पर चलते हैं. बैंक में आने वाले बुजुर्गों,दिव्यांगों की मदद के साथ ही अन्यों का सहयोग करने के लिए सदैव तत्पर रहते हैं. अधिकारियों का भी उन्हें सदैव सहयोग मिलता है. विनम्र स्वभाव के कारण दीपकभाई को सभी दिल से चाहते हैं. उनके मुताबिक जितना संभव होता है लोगों की मदद करने का प्रयास बैंक प्रबंधक तथा अधिकारियों के सहयोग से करते हैं. वे कहते हैं कि हर व्यक्ति को मानवता की सेवा का प्रयास करना चाहिए. इससे अपार खुशी मिलती है.

गुरु का वैराग्य उसको मिलता है जिसे गुरु वचन पर विश्वास हो ।

- माँ कनकेश्वरी देवी

राम नाम जपने से सभी प्रकार के दुख, दर्द और कठिनाइयां श्रीराम कृपा से अपने आप दूर हो जाया करती हैं। जैसे तेज हवा चलने से बादल भाग जाते हैं, वैसे ही राम नाम का जाप घबराहट को दूर कर देता है। यह बात मां कनकेश्वर देवी ने कही।

मां कनकेश्वरी देवी का कहना है कि जो जन दुख, घोर संकट आने पर भी राम नाम को जपते हैं, उनके भयंकर संकट जाप के प्रभाव से मिट जाते हैं और वो मनुष्य सुखी हो जाता है। जब इंसान पर संकट, भयंकर प्रकार के दुख तथा कष्ट क्लेश हो, तब उसे घबराना नही चाहिए। उस समय तुरंत राम नाम जपना चाहिए, क्योंकि राम नाम सबका पालक है। प्रभु श्रीराम सभी प्रकार के सुखों को देने वाले स्वामी हैं। जो भी जीव श्री राम रूपी सरोवर अर्थात सत्संगति में विचरता है, उसे श्री राम के दरबार में सम्मान प्राप्त होता है। जो गुरु उपदेश के अनुसार राम नाम जपते हैं, परमात्मा श्रीराम उन्हें गले लगा लेते हैं।

व्यक्तित्व निर्माण के लिए सत्संग जरुरी

- माँ कनकेश्वरी देवी

श्री सदगुरुमाँ कनकेश्वरीदेवी की अब तक ५०० से अधिक कथाएं...

परम पूज्य माँ मकनकेश्वरी देवीजी हम सभी के लिए अपरिचित नहीं हैं. हम उन्हे धार्मिक चॅनलो के माध्यम से देखा करते हैं. जैसे कि हम सभी को ज्ञात है लातूर नगरी में परम पूज्य मॉ की प्रथम राम कथा. १७से २५जनवरी०६ तक पल्लोड परिवार एवम मित्र परिवारने सफलतापूर्वक आयोजीत की थी.

माँ नाम ही स्वयं एक व्यक्तिमत्व है. जिसके उच्च आचरण से ही हमारे सामने माँ का करुणामय रुप प्रकट होता है. इन्ही करूणा, स्नेह, वात्सल्य के भावो से माँ का जीवन ओतप्रोत हैं. उनका परिचय शब्दों में देना संभव नहीं हैं. वे तो एक ऐसी विभूति हैं जिनके सान्निध्य मे आकर व्यक्ति को ममतामयी माँ का वात्सल्य और गुरु का मार्गदर्शन अपने आप मिल जाता है.

पूज्य मॉ कनकेश्वरी देवीजी का जन्म सौराष्ट्र के राजकोट जिले के मोरबी शहर में एक सुसंस्कारी परिवार में हुआ. बचपन से ही उनके मन को गुरु की तलाश थी. उम्र के ११वें साल में वह स्वर ही मूर्तिमंत बनकर सदगुरु प. पु. श्री केशवानंदबापू के रुप में मिल गये। माँ ने गुरुदेव के प्रथम दर्शन में ही उनको अपना सर्वस्व मान लिया और गुरुदेव ने भी उन्हें बेटी कहकर शिष्य रुप मैं अपना लिया.

पूज्य माँ की पढाई १० वीं कक्षा तक हुइ है. स्कूल छोडने के पश्चात १९८६ में उन्होंने श्री शंभू पंचाग्री में दिक्षा ली. वे गत १००वर्ष में श्री. शंभूपंचाग्री अखाडे की दीक्षा लेने वाली प्रथम महिला संत हैं. उनकी प्रथम कथा १९८६ में राजपुर गांव में श्री हनुमानजी मंदिर के प्रांगण में हुई तब से आज तक न सिर्फ कथा अपितु कथा के माध्यम से जीवन के हर अंग–प्रसंग पर बोलती हैं. उनकी वाणी की रसधारा में आत्मचेतना एवम् जीवन की सृजन शक्ति सहज ही अनुभुत होती हैं. परिपूर्ण जीवन जीने के लिए उनका मार्गदर्शन काम आता हैं. प. पू. माँ की वाणी में विराजमान वाग्देवी की कृपा का ही यह साक्षात चमत्कार है कि उनके व्दारा धर्म, कर्म तथा ज्ञानयज्ञ के माध्यम से दी गई असंख्य आहुतियों के कारण भौतिकवाद से परिपूर्ण इस युग में भी जनमानस में सामाजिक

सुदर्शन गांग
माँ के भक्त

चेतना, धर्मनिष्ठा का दिव्य शंखनाद हुआ है. अपनी सहज क्षमता, प्राणी मात्र के प्रति करुणा तथा स्नेह की प्रतिमूर्ति स्वरुपा प. पू. माँ की अनुपम प्रेरणा से राष्ट्र के अनेक स्थानों पर अन्नछत्र, गौशाला, विद्यालय, महाविद्यालय, संस्कृत विद्यालय, अनाथालय, वानप्रस्थाश्रम इत्यादी देशवासियों की सेवा में समर्पित भाव से संचालित है. जानेमाने साधनहीन बंधुओं को या किसी भी रुप में प्रकृति की निष्ठुरता से पीडित लोगों की सहायता करनेकी प्रेरणा हर वक्त दी है. संपुर्ण प्राणियों के कल्याण कें लिए समर्पीत है. अपने असंख्य बांधुओं को अभक्ष पदार्थ तथा मादक तत्वों से मुक्त रहने के लिए संकल्पीत करती है. यह उनके विराट व्यक्तित्व का जागृत उदाहरण है. गुजरात के अशोकनगर एवं मोरबी के खोखरा हनुमानजी आश्रम स्थित प. पू. माँ के आश्रम का दर्शन करने वाले सौभाग्यशाली भक्तों ने इस बात को साक्षात देखा है कि आश्रम में पिडित मानव ही नहीं अपितु पशु – पक्षी भी माँ के असीम प्रेम के पवित्र सूत्र में बंधकर बसे हुए है. प. पू. मां की वाणी से बरसता अमृत तथा अमोध आशीर्वाद हमे निरंतर मिलता रहे, यही कामना.

सन १९९५ में उनकी १०१ वीं रामकथा के अवसर पर रामकथा यज्ञ शताब्दी समारोह तथा सम्मेलन आयोजित किया गया था. इस सम्मेलन में व्दारका पीठाधीश्वर जगदगुरु शंकराचार्य प.पू. श्री स्वरुपानंद सरस्वती ने माँ को मानस राजहंस तथा आचार्य महामंडलेश्वर पू. श्री. प्रकाशानंदजी महाराज ने मानस मार्तण्ड की उपाधि से अलंकृत किया. मॉ सद्गुरु श्री केशवानंदबापू को अपने जीवन की प्रेरणा मानते हुए उनके बताए हुए मार्ग का अनुकरण करती है. माँ को अपने गुरु में अगाध श्रध्दा तथा विश्वास है. आज तक पू. माँ ने ५०० से अधिक रामकथा एवम् भागवत कथा तथा देवी कथा की है.

बिगड़ी बनाना तेरा काम है

तेरे दर पे आना मेरा काम है,
मेरी बिगड़ी बनाना तेरा काम है।
मैने चरणों में सर को झुका तो दिया,
अब सर को उठाना तेरा काम है।
मैने मन को मंदीर बना तो दिया,
अब आसन जमाना तेरा काम है।
मैने दीपक में बाती बना कर रखी
अब ज्योती जलाना तेरी काम है।
मैने तुझको अपना बना ही लिया
अब मुझको अपनाना तेरा काम है।

यह खेल निभाना मुश्किल है

क्यों भेष बदलकर फिरता है
यह खेल निभाना मुश्कील है
तु लाख छुपा ले दुनिया से
पर उससे छुपाना मुश्कील है।
तु चादर ओढ कर नेकी की
बदियों को छिपाता फिरता है
दिन रात किसी की खुशियों का
खून बहाता फिरता है
यह खून के छिंटे से
दामन को बचाना मुश्कील हैं।

गुजरात के मोरबी में पूज्य मां महामंडलेश्वर कनकेश्वरी देवी के हाथों गुरु पुर्णिमा विशेषांक का विमोचन

गुरूपूर्णिमा के गौरवमयी मौके पर विदर्भ स्वाभिमान द्वारा प्रकाशित गुरूपूर्णिमा विशेषांक का विमोचन पूज्य मां महामंडलेश्वर कनकेश्वरी देवी के हाथों मोरबी आश्रम में उनके अनन्य भक्त भाजपा के राष्ट्रीय नेता कैलाश विजयवर्गीय, सुदर्शनजी गांग, प्रदीप जैन, की मौजूदगी में किया गया. इसके लिए समाजसेवी सुदर्शन गांगजी का महत्वपूर्ण सहयोग मिला. मां के चरणों में कोटि-कोटि नमन., यह प्रभु की कृपा के बगैर संभव नहीं है. इस मौके पर आनंद परिवार के संचालक प्रदीप भैया जैन सहित अन्य हजारों भक्त उपस्थित थे.

बुजुर्गों का हक का आनंदघर है ज्ञान शांति उपवन

सेवा समर्पित है कोठारी परिवार, स्टॉफ भी मानवसेवी

अमरावती शहर धार्मिक के साथ सामाजिक कार्यों में सदैव अग्रणी रहा है. इस कार्य को आगे बढ़ाने और ऐसे बुजुर्गों कोआधार देने के साथ आनंद प्रदान करने का कार्य किया है ज्ञान शांति उपवन ने. यह जहां पर्यावरण से ओतप्रोत क्षेत्र में स्थित है,वहीं दूसरी ओर यहां रहने वाले बुजुर्गों का ध्यान माता-पिता सेवी कोठारी परिवार द्वारा माता-पिता के जैसे दिया जाता है. बड़े महानगरों की तर्ज पर इस आदर्श ओल्ड एज होम का डेवलपमेंट किया गया है. यहां के हर कमरे जहां स्वतंत्र हैं, वहीं बुजुर्ग लोगों की सुविधाओं के लिए हर कमरे में दो-दो बेड,आलमारी, को बोट शौचालय के साथ ही हर वह सुविधा उपलब्ध कराने का कार्य आदर्श पुत्र प्राध्यापक कोठारी ने अपनी मां श्रीमती शांतिदेवी कोठारी,पिता की चाहत एवं इच्छाओं के अनुरूप किया है.महंगाई के दौर में भी सबसे कम शुल्क पर रहने वाले बुजुर्गों को बेहतरीन सुविधाएं दी जा रही हैं, अमरावती के लिए ही नहीं तो यह अमरावती संभाग में अपनी तरह का पहला ऐसा आनंदघर कहा जा सकता है, जहां पर बुजुर्ग लोगों आत्मीयता मिलती है. ट्रस्टियों में राजेन्द्र बुच्चा, प्रेमकुमार जैन, बिपिन मिश्रा, सेवा समर्पित अरूणा पोलाड, दिनेश जैन के साथ ही सभी कर्मचारी भी उतने ही समर्पण भाव से बुजुर्गों की सेवा करते हैं.

कहते हैं व्यक्ति में अगर समर्पण हो और माता-पिता के प्रति प्रेम हो तो वह कुछ भी करता है.कोठारी के सुपुत्र केएल कॉलेज में प्राध्यापक रहने के बाद भी बुजुर्ग माता-पिता के लिए देखे गए सपनों को साकार किया, उसके लिए उनका

विणा दुबे
8855019189

साधुवाद. बेटे द्वारा यहां पर किया गया कार्य न केवल सराहनीय बल्कि समाज के ऐसे लोगों के लिए प्रेरणादाई है जिन्होंने जीवन में करोड़ों की दौलत कमाई है लेकिन समाज के ऐसे पीड़ितों के लिए कभी कुछ देने की चाहत नहीं रहती है.यहां की सुविधा मुंबई-दिल्ली की तर्ज पर है. विदर्भ स्वाभिमान ने स्वयं यहां पहुंचकर जब इसका

जायजा लिया तो गर्व हुआ.

यहां रहने वाले हर बुजुर्ग को एकाकीपन से छुटकारा देने के लिए स्वयं श्रीमती शांताबाई कोठारी, मिश्राजी, के साथ ही यहां के कर्मचारी भी पूरी तरह से मानवता सेवी समर्पित भाव से बुजुर्गों की सेवा करते हैं.स्वयं शांति देवी कोठारी का कहना है कि प्रभु के आशीर्वाद से उनके परिवार को सब कुछ मिला है, ऐसे में अगर जीवन की अंतिम बेला में अगर वह कुछ लोगों को खुशियां दे सकते हैं तो निश्चित तौर पर यह उनके लिए गौरव की बात होगी.भव्य इमारत, आसपास का प्राकृतिक पर्यावरण से स्वास्थ्य के लिए पूरा माहौल पोषक है. विदर्भ स्वाभिमान की टीम ने जब ज्ञान शांति उपवन को भेंट दी तो यहां का माहौल जहां खुशनुमा लगा वहीं दूसरी ओर यहां रहने वाले बुजुर्गों की उम्र तथा खुशियां बढ़ाने में भी सक्षम लगा.अमरावती जैसे छोटे से शहर में करोड़ों रुपए खर्च कर बनाया गया यह बुजुर्गों का आरामगाह कहना गलत नहीं होगा. जीवन रूपी ट्रेन में सवार हम सभी यात्री हैं, किस स्टेशन पर किसे उतरना पड़े, यह भले ही पता नहीं है. लेकिन कोठारी परिवार द्वारा किया गया यह कार्य निश्चित ही इस परिवार की गरिमा को न केवल बढ़ाएगा बल्कि बुजुर्गों के आशीर्वाद से यह परिवार उत्तरोत्तर प्रगति करेगा,इसमें हमें किसी तरह का संदेह नहीं है.

कोरोना महामारी के दौरान कई करोड़पति धन दौलत छोड़कर निपट गए और मुंह में पानी डालने वाला भी कोई नहीं रहा लेकिन जब हम जीते जी मानवता की सेवा अथवा धर्म कार्य या पुण्य कार्य करने का प्रयास करते हैं तो निश्चित तौर पर यह किया गया, अच्छा कार्य कभी बेकार नहीं जाता है.हमारे शास्त्र कहते हैं कि प्रभु की सेवा भी मानव सेवा में ही निहित है.जब हम किसी गरीब, दिव्यांग,असहाय बुजुर्ग की मदद करते हैं तो वह मदद हमारे जीवन में किस रूप में हमें वापस मिले यह हम भी नहीं जानते हैं.अमरावती की शान ज्ञानशांति उपवन में बुजुर्गों की देखभाल और सेवा के लिए रखा गया शुल्क नगण्य है. ऐसे में अधिक अधिक संख्या में ऐसे पीड़ित बुजुर्गों को इस नए आनंद घर का सहारा लेना चाहिए, जो परिवार के बीच रह कर भी खुश नहीं है.यहां रहने वाले हर बुजुर्ग का ध्यान कोठारी परिवार जिस तरह से रखता है वह भी अपने आप में अभिनंदनीय है.विदर्भ स्वाभिमान यह कामना करता है कि बुजुर्गों के लिए आनंदघर ज्ञान शांति उपवन उत्तरोत्तर प्रगति करे और कोठारी परिवार भी स्वस्थ रहे, मस्त रहे और प्रभु इस दरियादिली परिवार को कभी किसी बात की कमी नहीं पड़ने दें.

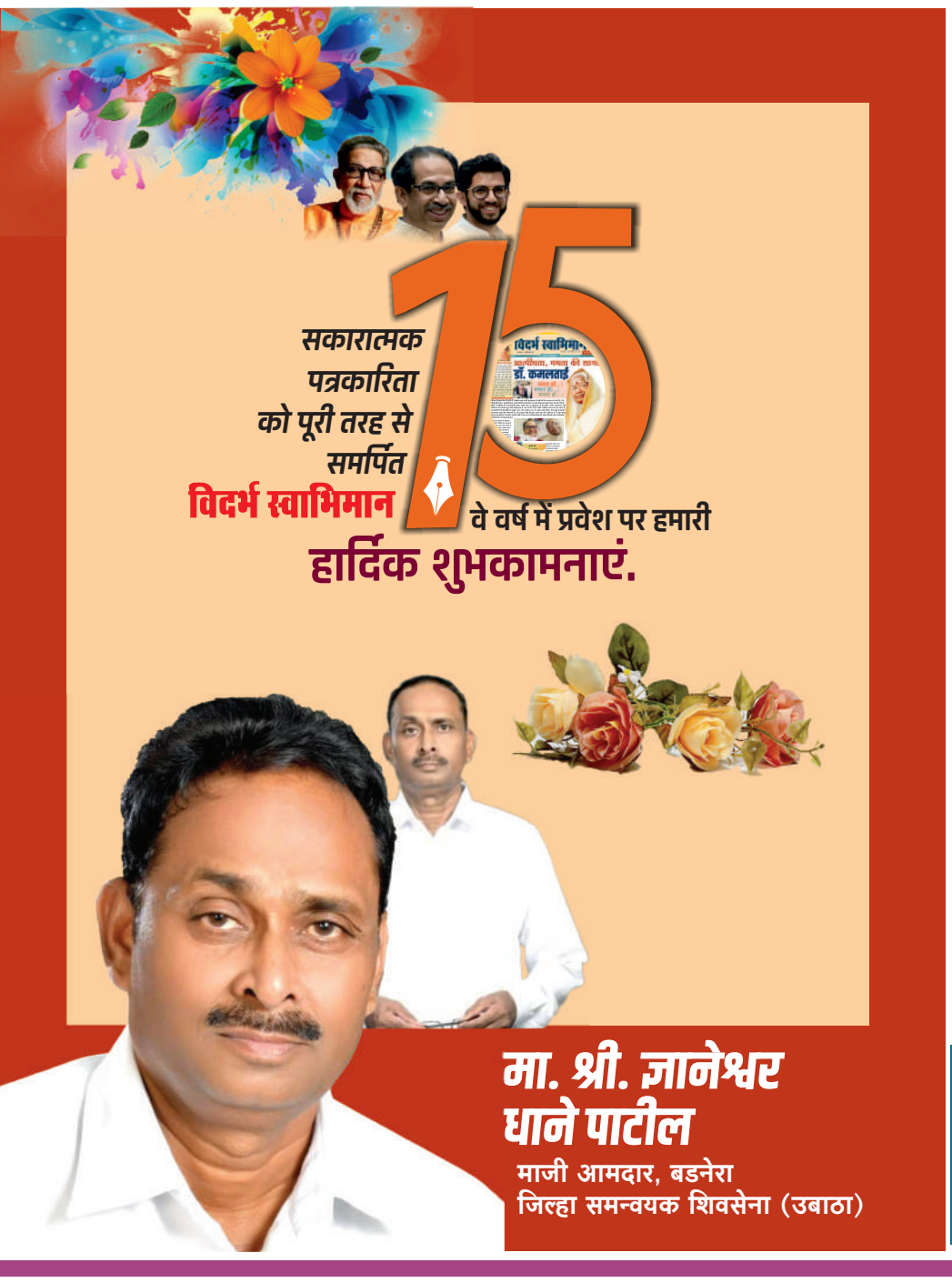

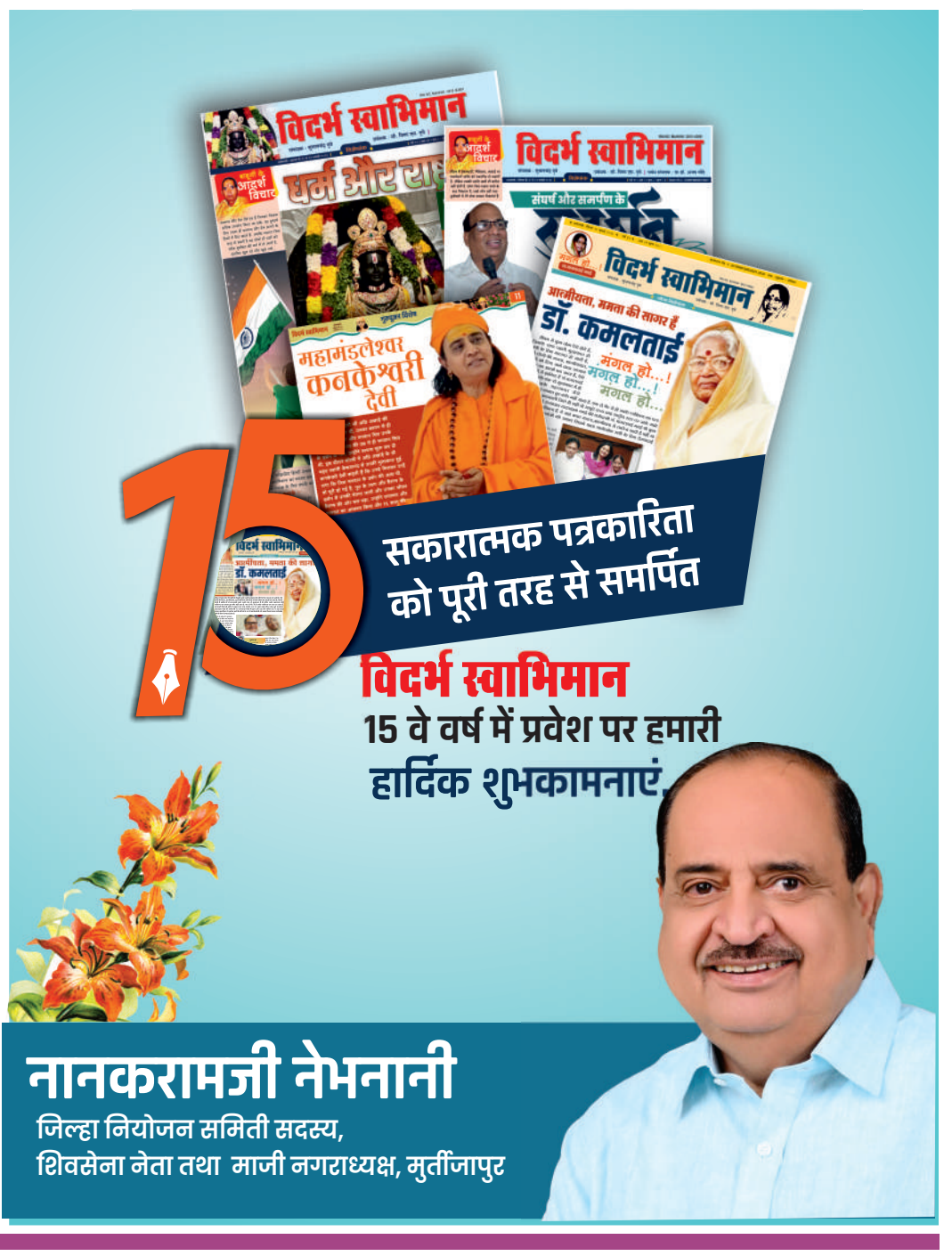

नैतिकता से मिलने वाली खुशी रहती है अपार

समाजसेवी डॉ.पंकज घुडियाल का प्रतिपादन

जीवन में प्रभु ने हमें अनुपम उपहार दिया है. उसे उपहार को जीवन की सबसे बड़ी ताकत बनते हुए नैतिकता तथा धर्म का पालन करते हुए सदेव जीवन जीने और किसी जरूरतमंद की मदद यथासंभव करने का प्रयास करना चाहिए. इससे मिलने वाली खुशी करोड़ों रुपए की दौलत के बराबर होती है. यह मत घुंडियाल रेडियो डायग्नोसिस सेंटर के प्रमुख और समाजसेवी डा. पंकज हुंडियाल ने व्यक्त किया. उनके मुताबिक व्यवसाय के साथ मानवता की सेवा के लिए सदैव यथासंभव प्रयास करते हैं. जीआरडीसी के संचालक तथा समाजसेवी घुंडियाल ने अपने केंद्र पर गरीब मरीजों के लिए पिछले तीन वर्ष से सुबह ८ से १०:०० बजे तक के समय में की जाने वाली हर टेस्ट पर विशेष छूट दी है अभी तक इसका हजारों की संख्या में गरीबों और जरूरतमंदों ने लाभ उठाया है. गरीब द्वारा दिल से दी गई दुआ कभी खाली नहीं जाती है इसे स्वीकार करते हुए वह कहते हैं कि जब से उन्होंने गरीबों के लिए हर जांच पर छूट देना शुरू किया है उनके केंद्र के उत्तरोत्तर प्रगति हो रही है. महंगाई के दौर में गरीब मरीजों को दी जाने वाली मदद से आत्मिक सुकून मिलने की बात कही. जीवन में माता-पिता को अत्यधिक महत्व देने वाले डॉ. पंकज घुंडियाल कहते हैं कि जीवन में जो पुत्र पुत्री अपने माता-पिता का प्रेम और आशीर्वाद प्राप्त कर लेते हैं वह जीवन में कभी पीछे नहीं हटते हैं. संस्कारों की जरूरत पर बल देते हुए कहा कि वे सौभाग्यशाली हैं जिन्हें आदर्श माता-पिता, पत्नी तथा बच्चों के साथ ही आदर्श परिवार मिला है. विदर्भ स्वाभिमान को आचार विचार तथा संस्कारों को बढ़ावा देने वाला समाचार पत्र बताते हुए वर्धापन दिन पर हार्दिक शुभकामनाएं दी.

विश्वसनीयता सहित आधुनिक सुविधाओं से परिपूर्ण है अभिनंदन हाइट

अभी तक कई दर्जन मिल चुके हैं पुरस्कार

आधुनिकता और स्पर्धा के इस युग में आज वही बैंक है लोगों के दिलों में स्थान बनती हैं जिनका कार्य विश्वसनीय रहता है सेवा तत्पर रहती है और समय के साथ चलने का प्रयास करती हैं. अमरावती जिला ही नहीं बल्कि संभागीय तथा विदर्भ स्तर पर लोकप्रिय अभिनंदन अर्बन को ऑपरेटिव बैंक लिमिटेड ने अभी तक ग्राहकों का विश्वास जहां जीता है वही समय के साथ अध्यक्ष एडवोकेट विजय बोथरा तथा प्रबंधन मंडल के अध्यक्ष समाजसेवी सुदर्शन गांग तथा संचालकों एवं कर्मयोगी मुख्य कार्यकारी अधिकारी शिवाजी देते, डिप्टी सीईओ अनिल उगले सहित सभी के प्रयास से बैंक ने कई मामलों में तो रिकॉर्ड बनाया है. ग्राहकों को दी जाने वाली सुविधाओं को लगातार अपडेट करने वाली इस बैंक की ग्राहकों की संख्या में लगातार वृद्धि हो रही है. ग्राहकों की इसी प्रेम

को ध्यान में रखते हुए बैंक द्वारा अत्याधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित मुख्यालय कैंप क्षेत्र में साकार हो रहा है. अभिनंदन हाइट बैंकिंग क्षेत्र की पहली ऐसी इमारत बनने वाली है जिसमें ग्राहकों की सुविधाओं के साथ तमाम प्रकार की आधुनिकतम सुविधाएं उपलब्ध कराई गई हैं. आज का दौर व्यस्तता का दौर है इसको ध्यान में रखते हुए बैंक द्वारा जल्द से जल्द एवं ग्राहकों को तत्पर सेवा कैसे दी जा सकती है, बेरोजगारी खत्म करने के साथ युवाओं को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में भी बैंक का सदैव सहयोग रहता है. बैंक प्रबंधन बोर्ड के अध्यक्ष सुदर्शन गांग के मुताबिक नई इमारत जहां आधुनिकतम सुविधाओं से सुसज्जित है वहीं दो लिफ्ट का काम लगभग पूरा होने को है. आगामी कुछ महीनो में यह शानदार इमारत बनकर तैयार हो जाएगी. बैंक में दो लाकरो का निर्माण किया गया है. मुख्यालय इमारत में एक शाखा क्षेत्र के ग्राहकों को सेवा देगी. बहु मंजिला इमारत में पार्किंग की भी बेहतरीन व्यवस्था की गई है. ताकि ग्राहकों को किसी तरह की असुविधा न हो. अभी तक बैंक को तीन दर्जन से अधिक संभागीय से लेकर राष्ट्रीय स्तर तक के पुरस्कार प्राप्त हो चुके हैं. अपने सदस्यों को आम सभा के दिन ही लाभांश उनके खाते में सीधे ट्रांसफर करने का कार्य भी इस बैंक द्वारा किया जा चुका है. कर्म योगियो एवं संचालकों के बीच बेहतरीन समन्वय, ग्राहकों के विश्वास और कर्ज दाताओं द्वारा समय पर कर्ज लौटाने के कारण ही बैंक लगातार प्रगति करने की बात बैंक के समर्पित अध्यक्ष एडवोकेट विजय बोथरा ने कहीं. साथ ही सभी संचालकों की एकता, निवेशकों और ग्राहकों के विश्वास से ही बैंक लगातार आगे बढ़ने की बात करते हुए सभी के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की. भविष्य में भी सभी का साथ, सभी का विकास पर ही काम करने का भरोसा दिलाया. प्रबंधन मंडल के अध्यक्ष सुदर्शन गांग के मुताबिक़ बैंक में संचालकों तथा कर्मयोगियों में बेहतरीन समन्वय के कारण बैंक आज लगातार आगे बढ़ रही है और अपने ग्राहकों को सेवा देने का प्रयास करती है. अभिनंदन हाइट का निर्माण देशभर की विभिन्न बैंकों की इमारत का निरीक्षण करने और उनकी खूबियों को समाहित करने का प्रयास किया गया है.

सामाजिक दायित्व को निभाने का प्रयास करना चाहिए

समाजसेविका निशि चौबे ने दी विदर्भ स्वाभिमान को शुभकामनाएं

आज समाचार पत्र का रूप बदल गया है. लोकतंत्र का चौथा स्तंभ समाचार पत्र ही होता है जो गरीबों पीड़ितों को सदैव न्याय दिलाने का काम करता है. विदर्भ स्वाभिमान ने सदैव सामाजिक दायित्व निभाते हुए धर्म व संस्कारों को बढ़ावा देने का कार्य किया है. इस आशा का मत समाज सेविका तथा भगवान महाकाल की अनन्य भक्त निशि चौबे ने व्यक्त किया. अखबार के १५ वे वर्ष में पदार्पण पर संपादक सुभाष दुबे को हार्दिक शुभकामनाएं देते हुए कहा कि पिछले १५ वर्षों से इस समाचार पत्र ने सदैव समाज में होने वाली हर अच्छी घटनाओं को हमेशा महत्व दिया है, दुनिया का अच्छा वाला रूप दिखाने का ही प्रयास किया है. किसी साप्ताहिक द्वारा माता-पिता की सेवा और उसके चमत्कार के बारे में पहली किताब मातृ पितृ देवो भव का प्रकाशन करते हुए किसी समाचार पत्र द्वारा सामाजिक दायित्व का निर्वाह किस तरह किया जाता है इसका आदर्श उदाहरण बना है. भक्ति भाव, परिवार की एकता और संस्कारों को बढ़ावा देने वाली निशि चौबे दो समाजसेवी संगठनों की प्रमुख है. इनके माध्यम से गरीबों और आर्थिक रूप से कमजोर महिलाओं को सिलाई मशीन तथा अन्य जरूरी साहित्य प्रदान कर उन्हें रोजगार देने का प्रयास करती हैं. शिव महापुराण कथा के लिए ११ सदस्य टीम बनाते हुए भगवान भोलेनाथ का गुणगान सर्वत्र करने का उनका इरादा है. पति डॉ विजय चौबे जहां उच्च विद्या विभूषित है वहीं दूसरी ओर बेटा सात्वीक नवी कक्षा कामयाबी छात्र है. बेटी कानून की उच्च शिक्षा प्राप्त कर रही है. निशि चौबे का मानना है कि स्वयं के साथ समाज तथा राष्ट्र की प्रगति में हर व्यक्ति को योगदान देने का प्रयास करना चाहिए.

अच्छा करने वाले का जीवन में बुरा नहीं होता

पूर्व विधायक धाने पाटिल का प्रतिपादन

जीवन में हम पर जो जिम्मेदारी प्रभु सौंपते हैं उसकी ईमानदारी से निर्वहन करने का प्रयास करना चाहिए. इस आशय का प्रतिपादन शिवसेना नेता ज्ञानेश्वर धाने पाटिल ने किया. उनके मुताबिक जब हम अच्छा करते हैं तो ऊपर वाला हमारा कभी बुरा नहीं होने देता है. सामाजिक कामों के साथ शिवसेना सदैव किसानो गरीबों के अधिकार तथा हितों के लिए प्रयास रत रहती है. विदर्भ स्वाभिमान ने विगत १४ वर्षों तक सकारात्मक पत्रकारिता की है. यह सराहनीय है. संस्कार को बढ़ावा देने के साथी परिवार को मजबूत करने तथा परिवार की एकता की दिशा में समाचार पत्र का प्रयास न केवल सराहनीय बल्कि अनुकरणीय है. यह इसी तरह उत्तरोत्तर प्रगति करें ऐसी कामना करते हुए उन्होंने १५वीं वर्षगांठ पर हार्दिक शुभकामनाएं दी.

15 सकारात्मक पत्रकारिता को पूरी तरह से समर्पित
विदर्भ स्वाभिमान
15 वे वर्ष में प्रवेश पर हमारी हार्दिक शुभकामनाएं.

पंकज मुद्गल

15 सकारात्मक पत्रकारिता को पूरी तरह से समर्पित
विदर्भ स्वाभिमान
15 वे वर्ष में प्रवेश पर हमारी हार्दिक शुभकामनाएं.
-शुभेच्छूक-
हेमंतकुमार पटेरिया
अनुराधा पटेरिया
तथा पटेरिया परिवार
न्यू गणेश कॉलनी, अमरावती

15 सकारात्मक पत्रकारिता को पूरी तरह से समर्पित
विदर्भ स्वाभिमान
15 वे वर्ष में प्रवेश पर हमारी हार्दिक शुभकामनाएं.
डॉ. सुभाष रत्नपारखी
सुप्रसिद्ध दंतचिकीत्सक,,अमरावती

15 सकारात्मक पत्रकारिता को पूरी तरह से समर्पित
विदर्भ स्वाभिमान
15 वे वर्ष में प्रवेश पर हमारी हार्दिक शुभकामनाएं.
-शुभेच्छूक-
सौ.निशी चौबे
समाजसेविका,अमरावती

सेवा परमोधर्म मानते हैं नानकराम नेभनानी

सर्वधर्म समभाव तथा मदद के लिए सदैव तत्पर समाजसेवी

शहर में तेजी से लोकप्रिय हो रहे और सर्वधर्म समभाव का पालन करने वाले नेता के रूप में नानकराम नेभनानी आदर्श समाजसेवी,नेता के साथ ही सभी की मदद को दौड़ने वाले व्यक्ति हैं. उनका कहना है कि प्रभु जितनी प्रेरणा देता है, उसमें सेवा कार्य को महत्व देने का वे सदैव प्रयास करते हैं. मुर्तिजापुर के नगराध्यक्ष के रूप में विकास का जहां अपार प्रयास किया, वहीं अमरावती में आने के बाद भी व्यवसाय के साथ ही सामाजिक कामों, साहित्यिक तथा धार्मिक कामों में भी सदैव प्रयास किया. उनके द्वारा अपने मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे के साथ संबंधों का उपयोग करते हुए जिस तरह से कंवरधाम के लिए १०० करोड़ रूपए की निधि लाने के लिए प्रयास विधायक रवि राणा के सहयोग से किया गया, वह अनुकरणीय है.

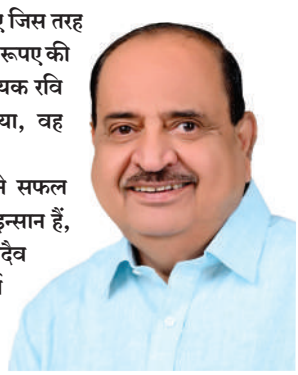

नानकराम नेभनानी जितने सफल व्यवसायी हैं, उतने ही बेहतरीन इन्सान हैं, जो सभी की मदद के लिए सदैव तत्पर रहते हैं.वे कहते हैं कि धर्म जोड़ने का काम करता है. जो धर्म तोड़ता है, वह धर्म नहीं हो सकता है. उनके मुताबिक मानवता का धर्म अगर हर मानव निभाने लगे तो दुनिया स्वर्ग बन जाए और कभी किसी को किसी बात की चिंता ही नहीं रहे. आज बोलने वाले नेताओं की संख्या बढ़ रही है लेकिन जिन्हें समाज,शहर का प्रेम सही मायनों में घट रहा है लेकिन नेभनानी ने अल्प समय में ही समाज के साथ ही शहर में जिस तरह की लोकप्रियता हासिल की है, उनकी विनम्रता और सादगी सभी को प्रभावित करती है. वे कहते हैं कि प्रभु ने जो जीवन दिया है, जितनी सांसें दी हैं, उनमें वह लोगों के काम में कितना आ सकते हैं, इसका सदैव विचार करते हैं. स्वयं को भाग्यशाली मानते हैं कि लोगों का अपार प्रेम उन्हें मिला है. उनके जन्मदिन पर जिस तरह से सांस्कृतिक भवन में हजारों चहेतों की भीड़ उमड़ी थी, वह उनकी अपार लोकप्रियता का सबूत ही थी. हर व्यक्ति पहुंचकर उन्हें आशिर्वाद देने के लिए लालयित था. उन्होंने जीवन में सदैव अच्छा करने का प्रयास किया. वे कहते हैं कि आपने अगर अच्छा किया है तो आपका कभी बुरा नहीं होगा. सभी को यही संदेश देते हैं और अपने जीवन में सदैव इसी पर अमल करते हैं. मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे सहित कई मंत्रियों से करीबी संबंध रहने के बाद भी उनकी विनम्रता सदैव उन्हें हर व्यक्ति के दिल में सम्मान दिलाती है. विदर्भ स्वाभिमान के १५वें वर्धापन दिन पर शुभकामनाएं देने के साथ ही सामाजिक दायित्व की भावना निभाने वाले समाचार पत्र की उन्होंने सराहना की. अपनी शुभकामनाएं देने के साथ ही सदैव इसी को ताकत बनाने की बात कही.

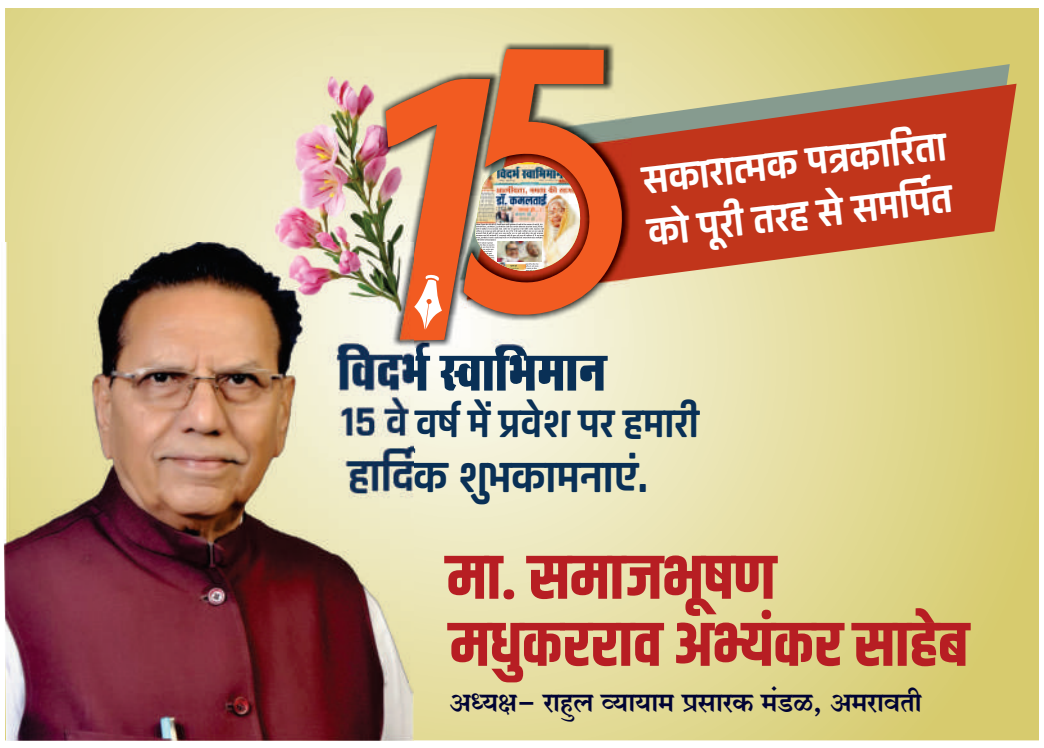

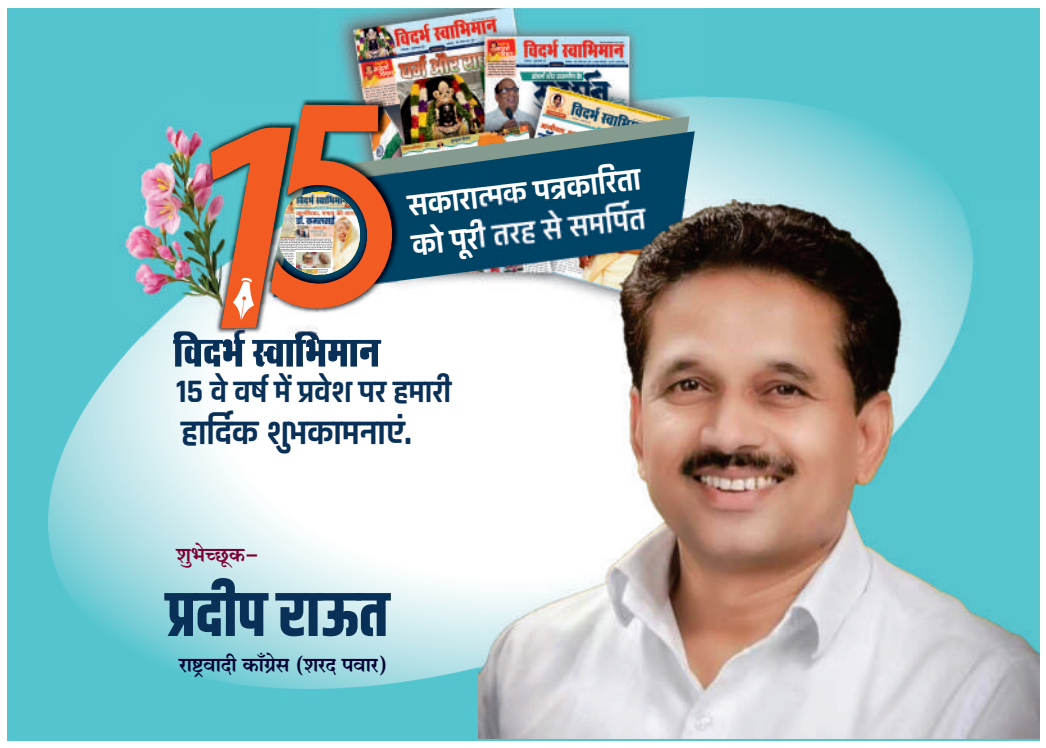

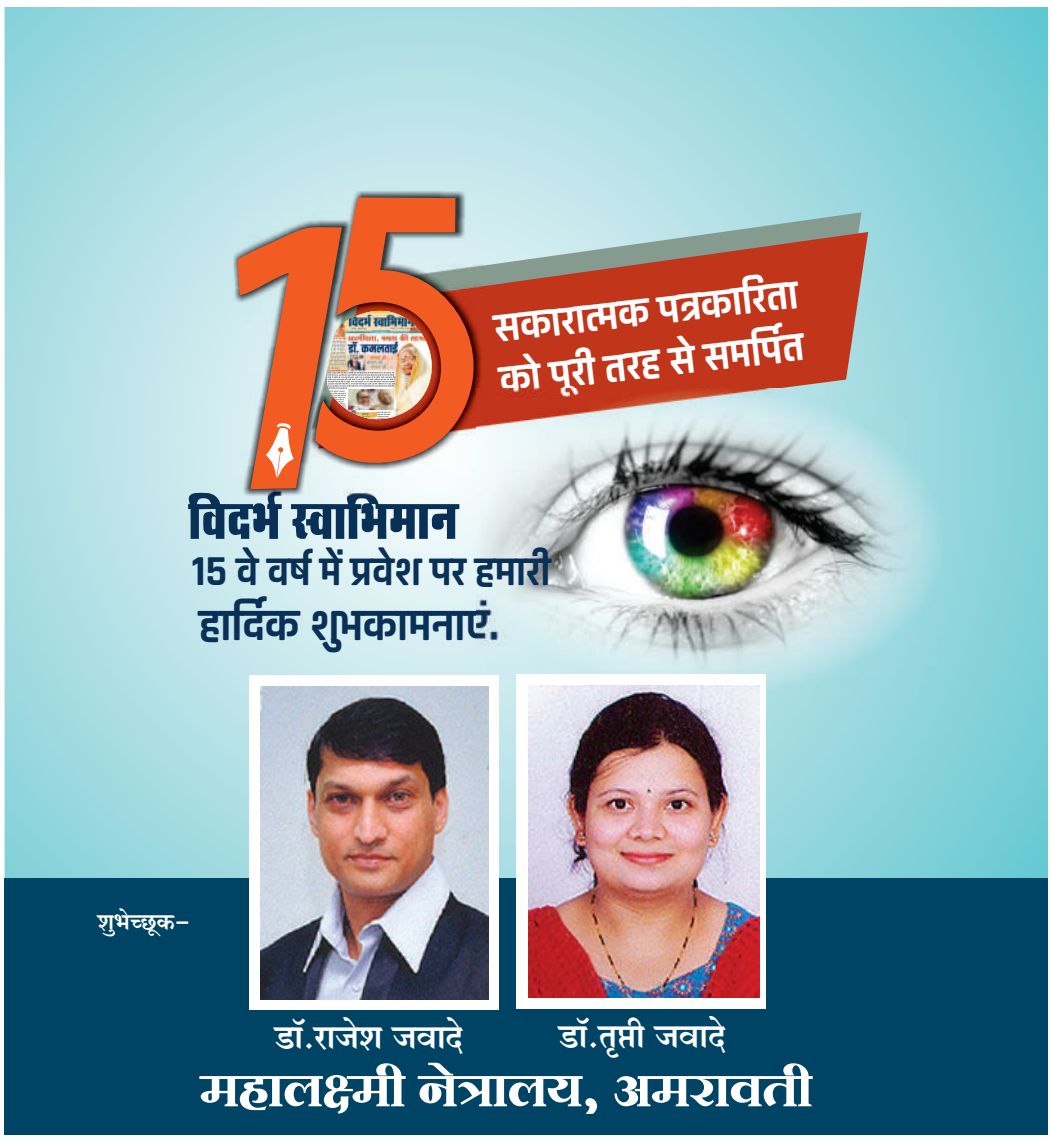

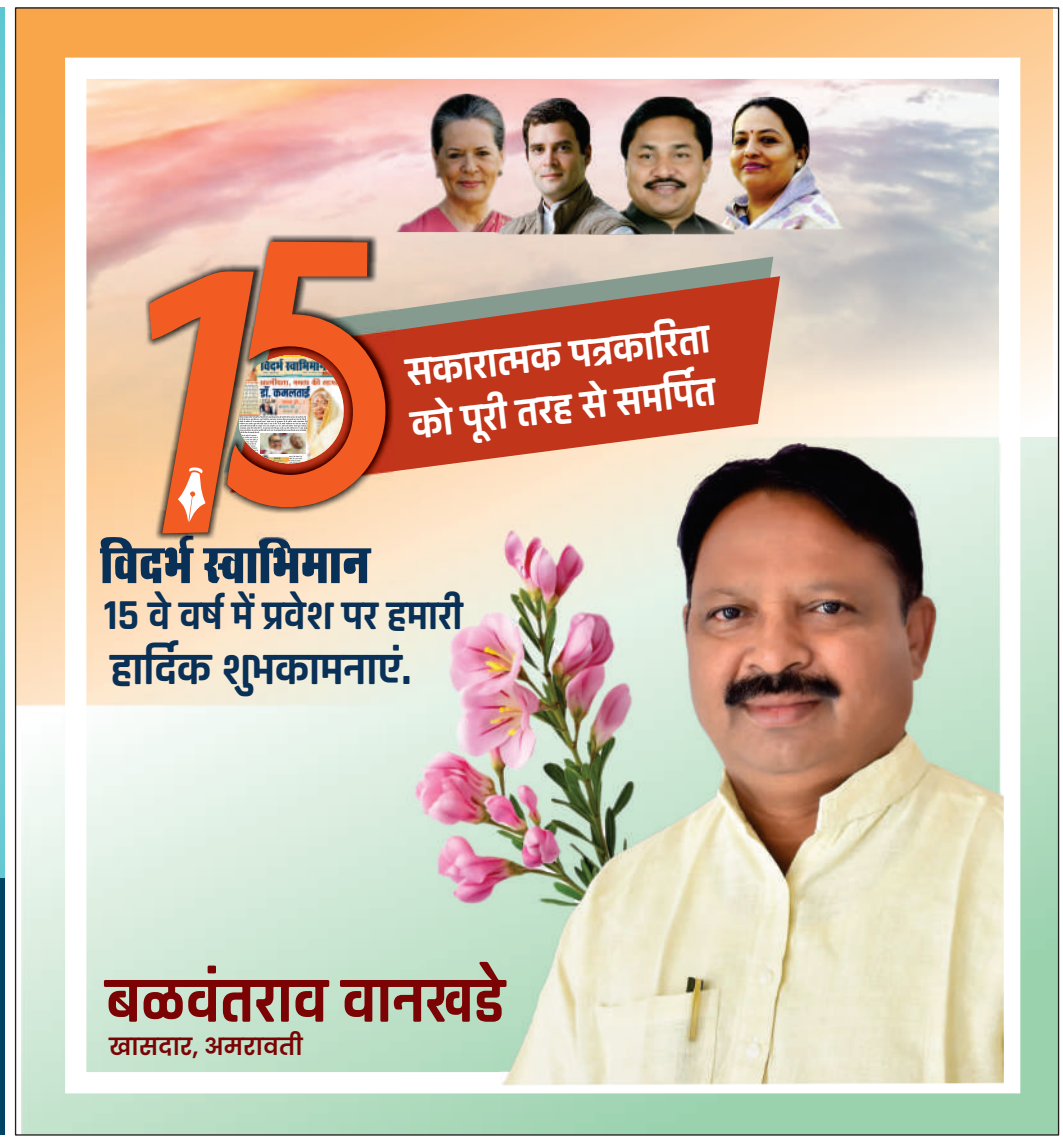

मानव धर्म है सबसे बड़ा धर्म

जिलाधिकारी सौरभ कटियार ने विदर्भ स्वाभिमान को सराहा

श्वेता दुबे/अमरावती

जीवन में जितने भी पल हमें मिले हैं मानवता की सेवा, किसी के चेहरे पर मुस्कराहट लाने की कोशिश करनी चाहिए. किसी जरूरतमंद की मदद करने से मिलने वाली खुशी शब्दों में बयां नहीं की जा सकती है. अच्छाई को बढढ़ाने का जब सभी प्रयास करेंगे तो निश्चित ही दुनिया का अच्छा रूप सामने आएगा. हिन्दी साप्ताहिक विदर्भ स्वाभिमान ने १४ साल से केवल सकारात्मक पत्रकारिता की है, यह सराहनीय है. इन शब्दों में कर्मठ अधिकारी सौरभ कटियार ने १५ वें वर्ष में पदार्पण पर अपनी शुभकामनाएं दी. जिले में मेलघाट के आदिवासियों का दर्द समझने के लिए १०० अधिकारियों की टीम के साथ गांव में डेरा डालने और समस्याएं सुनने वाले जिलाधिकारी कटियार के मुताबिक आज जिंदगी बहुत छोटी हो गई है, ऐसे में किसी को दी गई खुशी कभी बेकार नहीं जाती है. केवल पैसे से ही मदद नहीं की जाती है, हम किसी दिव्यांग,बुजुर्ग, गरीब की यथासंभव मदद कर भी मानवता के दीप को जलाए रख सकते हैं. जीवन में प्यार, ज्ञान देने से ही बढता है. इसका ध्यान जीवन में जो लोग रखते हैं, उनके जीवन में कभी परेशानी नहीं आती है. जिले के सर्वांगीण विकास के साथ ही धार्मिक पर्यटन को बढढावा देने के लिए प्रयासरत रहने वाले सौरभ कटियार ने कलेक्टर के रूप में जिम्मेदारी संभालने के बाद लोकाभिमुख प्रशासन का सदैव प्रयास किया. लोगों की शिकायतें सुनने और उनका निराकरण करने के मामले में सदैव तत्पर रहते हैं. कर्मठता के साथ ही संवेदनशीलता इतनी है कि दिव्यांग संस्थाओं में जाने के बाद वहां की समस्याएं सुनना, अनाथों के नाथ पद्मश्री शंकरबाबा पापडकर के सहयोग के साथ ही जरूरतमंदों को सदैव मदद करने के लिए प्रयासरत रहते हैं. विदर्भ स्वाभिमान के १४ वर्ष की पत्रकारिता की सराहना करते हुए कहा कि जिले की जनता समझदार है, सभी के सहयोग से ही विकास तथा अन्य काम होते हैं. उन्हें जिलाधिकारी के रूप में सभी का सहयोग मिलता रहा है. यही कारण है कि बेहतरीन करने का प्रयास सदैव करते हैं.

मददगार बैंक प्रबंधक हैं विनिता राऊत

अमरावती– बहुत कम ऐसे अधिकारी हैं, जो जनता का प्यार पाने में सफल होते हैं. लेकिन लोकाभिमुख कामों से विनम्रता और सहयोग करने की भावना के कारण बैंक ऑफ इंडिया देवरणकर नगर शाखा की वरिष्ठ प्रबंधक विनिता राऊत ने अपना स्वयं का स्थान ग्राहकों के दिलों में बनाया है. विदर्भ स्वाभिमान द्वारा संपर्क करने पर उन्होंने बताया कि बैंक ने जो जिम्मेदारी सौंपी है, अपने स्तर पर बेहतरीन तरीके से निभाने का प्रयास, करती हैं. बुजुर्ग महिलाएं,दिव्यांगों तथा लोगों की मदद में सदैव सक्रिय रहती हैं. इस बैंक का हर अधिकारी और कर्मचारी ग्राहकों की सेवा में तत्पर रहने के कारण ही आज क्षेत्र ही नहीं तो यह बैंक काफी लोकप्रिय है.

विदर्भ स्वाभिमान द्वारा बेहतरीन अधिकारियों की जानकारी देने के उद्देश्य से किए गए प्रयास में वे भी ऐसी अधिकारी साबित रही, जिनमें कर्मठता के साथ ही संवेदनशीलता और सदैव लोगों की मदद की भावना है. यही कारण है कि वे जहां भी जाती हैं, अपने कार्यों की अमिट छाप छोडती हैं. वे कहती हैं कि जो जिम्मेदारी है, उसे सही तरीके से निभाना भी सबसे महत्वपूर्ण काम होता है. हर व्यक्ति अपनी जिम्मेदारी अगर सही तरीके से निभाए तो निश्चित तौर पर संस्थान की तरक्की तय रहती है. ग्राहकों को सदैव बेहतरीन सेवा देने का प्रयास रहने की बात कही. बैंक के ग्राहकों से भी सदैव बेहतरीन सहकार्य मिलने की बात कही. उन्होंने विदर्भ स्वाभिमान के १५वें वर्ष में पदार्पण पर बैंक परिवार की ओर से शुभकामनाएं दी. साथ ही इसी तरह सदैव सकारात्मक पत्रकारिता शुरू रखने की कामना की.